तोरई की खेती...

तोरई भारत में खरीफ और गर्मी दोनों मौसम में उगाई जाने वाली लौकी जाति की सब्ज़ी है। इसका उत्पादन आसान और कम लागत वाला होता है। नीचे विस्तार से जानकारी दी गई है:

जलवायु

तोरई गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छी होती है।

२५–३५°C तापमान उपयुक्त है। हल्की वर्षा सह लेती है, लेकिन अधिक पानी रुकने से नुकसान होता है।

भूमि

अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त है। pH मान ६–७.५ आदर्श है। खेत की जुताई करके गोबर की खाद (२०–२५ टन/हेक्टेयर) डालनी चाहिए।

बीज और बुवाई बीज की मात्रा: ४–५ किलो/हेक्टेयर

बुवाई का समय:

खरीफ मौसम → जून–जुलाई

रबी मौसम (दक्षिण भारत) → अक्टूबर–नवंबर

ग्रीष्म मौसम → फरवरी–मार्च

बीज को बोने से पहले १२ घंटे गुनगुने पानी में भिगोना लाभकारी है। कतार से कतार की दूरी १.५–२ मीटर और पौधे से पौधे की दूरी ६०–९० सेमी रखें।

सिंचाई

खरीफ में वर्षा पर्याप्त होती है, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर हल्की सिंचाई करें।

ग्रीष्मकालीन खेती में ७–१० दिन के अंतर पर नियमित सिंचाई करें।

पानी का ठहराव नहीं होना चाहिए।

खाद और उर्वरक

गोबर की खाद: २०–२५ टन/हेक्टेयर

रासायनिक खाद (प्रति हेक्टेयर):

नाइट्रोजन (N): ८०–१०० किलो

फॉस्फोरस (P_2O_5): ४० किलो

पोटाश (K_2O): ४० किलो

आधा N और पूरा P, K बुवाई के समय दें, शेष आधा N दो भागों में फूल आने पर दें।

बेल प्रबंधन

बेलों को मचान (trellis / bower system) पर चढ़ाना सबसे अच्छा होता है।

इससे फल सीधे और लंबे बनते हैं तथा उत्पादन भी बढ़ता है।

रोग और कीट नियंत्रण (Pests & Diseases)

लाल मक्खी/फली मक्खी → नीम तेल का छिड़काव करें। फ्यूजेरियम विल्ट, पाउडरी मिल्ड्यू → रोगरोधी किस्में चुनें और जरूरत पड़ने पर गंधक का छिड़काव करें।

फसल कटाई

बुवाई के ५०–६० दिन बाद फल तोड़ना शुरू किया जा सकता है।

कोमल और मुलायम अवस्था में तोड़ें।

तोरई का उत्पादन → १००–१५० क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक मिल सकता है।

उन्नत किस्में

स्पंज तोरई: Pusa Chikni, Pusa Sneha, Co-1

रिज तोरई: Pusa Nasdar, Arka Sumeet, Arka Sujata, Pant Torai

तोरई की खेती कम लागत, जल्दी फलने वाली और लगातार तोड़ाई देने वाली फसल है। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि छोटे किसान भी इसे आसानी से उगा सकते हैं और हरी सब्ज़ी की मांग हमेशा बनी रहती है। तोरई से अच्छी पैदावार और मुनाफ़ा पाने के लिए कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है।

तोरई की अच्छी पैदावार और मुनाफे के लिए उपाय

बीज और किस्म का चुनाव

हमेशा उन्नत किस्म (HYV/Improved Varieties) जैसे → Pusa Nasdar, Pusa Sneha, Arka Sumeet, Pant Torai लगाएँ।

रोग-प्रतिरोधक किस्में चुनने से नुकसान कम और पैदावार ज़्यादा होती है।

बीज उपचार

बीज को ट्राइकोडर्मा या कार्बेन्डाजिम से उपचारित करें। इससे मिट्टी और बीज जनित रोग कम होंगे।

मिट्टी की तैयारी और खाद

खेत में भरपूर गोबर की खाद/वर्मी कम्पोस्ट डालें।

संतुलित उर्वरक (NPK) सही समय पर दें →

आधा नाइट्रोजन + पूरा फॉस्फोरस ₹ पोटाश बोआई के समय।

बाकी आधा नाइट्रोजन → बेल बढ़ने और फूल आने पर।

सूक्ष्म पोषक तत्व (जिंक, बोरॉन, मैग्नीशियम)

का छिड़काव करने से फूल और फल दोनों अच्छे बनते हैं।

बेल का प्रबंधन

बेलों को ज़मीन पर न फैलाकर मचान (trellis/bower system) पर चढ़ाएँ। इससे फल सीधे, लंबे और बाजार में आकर्षक बनते हैं। पैदावार २०–२५% बढ़ जाती है।

सिंचाई प्रबंधन

गर्मी में ७–१० दिन पर और बरसात में जरूरत के अनुसार हल्की सिंचाई करें।

ड्रिप इरिगेशन + मल्चिंग अपनाएँ → पानी, खाद की बचत होगी और पैदावार बढ़ेगी।

कीट व रोग नियंत्रण

नीम तेल (५ मिली/लीटर) का छिड़काव नियमित करें। फली मक्खी, लाल मक्खी, पाउडरी मिल्ड्यू आदि से बचाव के लिए जैविक या सुरक्षित कीटनाशक का उपयोग करें। समय-समय पर बेलों की निगरानी करें।

फलों की सही समय पर तुड़ाई

तोरई का सबसे अच्छा दाम तभी मिलता है जब फल कोमल और हरे हों। अधिक देर तक छोड़ने से फल कठोर हो जाते हैं और बाजार भाव कम मिलता है।

बाज़ार की योजना

तोरई की मांग पूरे साल रहती है, लेकिन गर्मी और बरसात में दाम अधिक मिलते हैं। फसल को सीधे मंडी, होटलों या सब्ज़ी विक्रेताओं को सप्लाई करें → बिचौलियों से बचेंगे। अगर संभव हो तो लोकल हाट-बाजार और सुपरमार्केट सप्लाई चेन से जुड़ें।

अतिरिक्त आय

खेत के किनारों पर हरी सब्ज़ियाँ (मेथी, धनिया, पालक) लगाएँ → अतिरिक्त कमाई होगी।

जैविक खेती करके सीधे उपभोक्ता को बेचें तो दाम और भी अधिक मिलते हैं।

अच्छी खेती से १००–१५० क्विंटल प्रति हेक्टेयर तोरई मिल सकती है।

मंडी भाव (₹१५–२५ प्रति किलो) मानें तो →

१ हेक्टेयर से ₹१.५–३ लाख तक की आय संभव है। लागत निकालने के बाद ६०–७० हजार से ₹१.५ लाख तक शुद्ध मुनाफ़ा हो सकता है।

यानी तोरई की खेती में सही किस्म + जैविक खाद + मचान पर बेल + समय पर सिंचाई और छिड़काव ही सफलता की कुंजी है।

१ एकड़ (लगभग ४० गुंठा / ४०४७ वर्गमीटर) में तोरई की खेती का पूरा लागत व मुनाफ़े का हिसाब...

☐ १ एकड़ तोरई खेती की लागत और मुनाफ़ा

१. लागत (खर्च)

खर्च का मद अनुमानित लागत (₹)

बीज (१–१.२५ किलो) ८०० – १,२००

खेत की तैयारी (जुताई, गोबर की खाद ४–५ ट्रॉली) ४,००० – ५,०००

उर्वरक व सूक्ष्म पोषक तत्व ३,०००–३,५००

सिंचाई (ड्रिप लगाएँ तो १०,००० तक, सामान्य २,५००–३,०००) ३,००० – १०,०००

मजदूरी (बुवाई, गुड़ाई, तुड़ाई, मचान बाँधना) ८,००० – १०,०००

कीटनाशक/जैविक छिड़काव २,००० – ३,०००

मचान (Bower System, बाँस/तार) (एक बार का खर्च, ३ साल तक काम देगा) १५,००० – १८,०००

अन्य खर्च (परिवहन, मंडी शुल्क, आदि) २,००० – ३,०००

☐ कुल लागत (मचान के साथ) → ₹३८,००० – ५०,०००

☐ कुल लागत (मचान के बिना) → ₹२०,००० – २५,०००

२. उत्पादन

सामान्य पैदावार: ८०–१०० क्विंटल / एकड़

अच्छी देखभाल व मचान पर खेती: १२०–१५० क्विंटल / एकड़

३. आय

औसत मंडी भाव: ₹१५–२५ प्रति किलो

मान लें औसतन ₹१८/kg मिला →

१२० क्विंटल (१२,००० किलो) × ₹१८ = ₹२,१६,००० आय

४. शुद्ध मुनाफ़ा (नू इंदौर)

मचान सहित खेती → ₹२,१६,००० – (₹४५,००० खर्च), ₹१.७ लाख तक मुनाफ़ा

मचान बिना खेती → ₹२,१६,००० – (₹२२,००० खर्च) = ₹१.९ लाख तक मुनाफ़ा

(लेकिन बिना मचान फल छोटे और कम आकर्षक होंगे, इसलिए दाम थोड़ा कम मिल सकता है)

☐ नतीजा

☐ १ एकड़ तोरई की खेती से किसान ₹१.५ से ₹२ लाख शुद्ध मुनाफ़ा कमा सकते हैं, अगर सही तकनीक अपनाएँ।

☐ यह सब्ज़ी हर २–३ दिन पर तुड़ाई देती है, इसलिए रोज़ाना नकद आमदनी का ज़रिया भी बनती है।

SWARNIM MUMBAI MAGAZINE

मुंबई की कहानियां

शब्दों की दुनिया

Read Now / अभी पढ़ें

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।

आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।

किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com